جنوری ۲۰۱۳ء

ماہنامہ

شعاع عمل لکھنؤ

قال اللہ تبارک وتعالیٰ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ-۳

PUBLISHED ON 4th SUNDAY OF EVERY MONTH
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

January 2013





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 9 | अंक 7

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:
मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख़्वाजा पीरी, ईरान
- सै० हसन अब्बास नक़वी, मुम्बई
- मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
- प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- सै० अहमद अब्बास नक़वी, मुम्बई
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ अली नक़वी, दिल्ली
- मुहम्मद आसिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जनवरी 2013

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक
क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी
सै० आसिफ़ अब्बास नौगांवी, हैदर अब्बास रिज़वी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230   Mobile No: 09335276180 — 09335996808

Per Copy 20/-   Annual 200/-



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर

2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर

3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर

4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

जनवरी 2013ई०
सफ़र 1434हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
सम्पादन : नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त - 8

बावजूद इसके कि इनमें काफिरों के आम लोग इस बात से बिल्कुल अनजान हैं कि पूजी जाने वाली मूर्तियां ख़ुदा के ध्यान का रास्ता हैं, बल्कि वे मर्तियों को सच्चा भगवान समझते हैं और ये कहना कि हम मूर्तियों को ख़ुदा नहीं मानते बल्कि मानते तो एक ख़ुदा को ही हैं और ईश्वर को निराकार मानते हैं और ये बुत मूर्ति सिर्फ़ उसकी याद का एक ज़रिया है । ये बात सिर्फ़ एक सीमिति पढ़े लिखे (वर्ग) के लोग ही कहते हैं, जो अपने बाप-दादा के चलन को अपनी तर्क (Logic) से सही ठहराना चाहते हैं । इसके अलावा हम देखते हैं कि अरब के जाहिल काफ़िर भी अपनी मूर्ति पूजा के बारे में यही तर्क देते थे। इसी से कुर्आन मजीद ने उनकी बात को दोहराया है कि वह कहते हैं - *''मा नाबुदु हू इल्ला लियक़ूरबूना इलल-लाहि ज़ुल्फ़ा* '' (हम इनकी (मूर्ति की) सिर्फ़ इसलिए पूजा करते हैं कि इनके जरिये से हम अल्लाह के नज़दीक हो जाए।) इसका मतलब ये है कि ये अल्लाह की हस्ती को अलग मानते हैं और वह बुतों को उससे जुड़ा हुआ नहीं मानते एक जगह है -'' अगर इनसे पूछो कि आसमान और ज़मीन को किस ने पैदा किया तो ये कहेंगे, अल्लाह ने '' इससे पता चलता है कि वह मर्तियों को दुनिया का बनाने वाला भी नहीं समझते थे । सच्चाई ये है कि दो चीज़ें हैं एक ' शिर्क फ़िल उलूहिया '' यानी सचमुच अल्लाह को ख़ुदा न मान कर किसी और चीज़ को ख़ुदा मानना और दूसरी चीज़ है ''शिर्क फ़िल इबादः'' यानी (दिल में चाहे 'एक' ख़ुदा (निराकार ईश्वर) का यक़ीन हो ख़ुदा के अलावा किसी और की पूजा करना । पहली तरह का शिर्क करने वाले देखने में दुनिया का कोई गुट नहीं है । क़ुर्आन ने जिसको शिर्क कहा है वह दूसरे ही तरह के लोग हैं और इस तरह हिन्दु जो मूर्ति पूजा को मानते हैं वह अपने मूर्ति पूजा को कुछ भी बताएँ या बात बनाने को कुछ भी कहें वे 'मुशरिक' (शिर्क करने वाला) की परिभाषा से बाहर नहीं हो सकते।

रह गये यहूदी और ईसाई, उनको क़ुर्आने मजीद में साफ़-साफ़ कई जगह मुशरिक (ख़ुदा के साथ किसी और को साझी समझने वाला) बताया गया है । एक जगह कहा गया है कि '' यहूद कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं '' '' आखिर में है '' अल्लाह उन सब से ऊँचा है जिनको उस का साझी बनाते हैं।
और इसाईयों के लिए ईसा से कही हुई बात दुहराई गई है ।''और इसाईयों से कहा जा रहा है कि ''
इसमें साफ़ इसाईयों के मानने को एक ख़ुदा के मानने का उल्टा बताया गया है। और इसी से आपको मालूम होगा कि आर्य समाज ख़ुदा के साथ आत्मा/रूह और वस्तु माद्दे को हमेशा से अनादि रहने वाला मानते हैं, तो वह सभी इसाईयों के ही रास्ते पर चलते हैं। और ईरान के 'पारसी' नूर (उजाले) और अंधेरे को दुनिया को शुरू करने वाला मानने की वजह से 'मुशरिक' ठहरते हैं। फिर जिन में अली बिन जाफ़र, मोहम्मद बिन मुस्लिम की रवायतों और सईदुल आरज की भरोसे वाली रयायत है, ये साफ़-साफ़ मजूस (Magian) को नजिस बताते हैं और दूसरी सही हदीसों से भी यहूदियों और ईसाइयों का नजिस होना साबित होता है । इन सब बातों के ख़िलाफ एक आयत पेश की जाती है कि
''तुम्हारे लिए उन लोगों का खाना जिन्हें किताब दी गई है, हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है ।

इसका मक़सद (आस्मानी) किताब वालों को फ़तवा देना है कि वह मुसलमानों को पाक समझें बल्कि

आयत के दोनों टुकड़ों पर बराबर से देखने पर मालूम होता है कि इसका मतलब कुछ और ही है। बात ये है कि उस ज़माने में ग़ल्ले का बेचना-ख़रीदना ज़्यादातर यहूदियों और ईसाइयों के साथ था । मुसलमानों को कई आयतों में काफ़िर से दोस्ती और किसी तरह से भी उनके साथ लगाव रखने से मना किया गया था, इसलिए इनको ये चिन्ता थी कि ख़रीदना व बेचना और लेन-देन के मामले इन यहूदियों के साथ भी करना सही नहीं है । आयत ने आकर इस शक को दूर किया और बताया कि इनके साथ ख़रीदने-बेचनें और लेन-देन में कोई हर्ज नहीं है। ये मामले नजासत और पाकी से कुछ भी जुड़े नहीं है और ये कहना भी सही नहीं है कि अगर (आस्मानी) किताब वाले नजिस होते तो इस हुक्म में क़ैद या सीमा लगाने की ज़रूरत थी और जब कि यहां आम हुक्म है । इसमे मालूम होता है कि अलग से किसी चीज़ को मना नहीं किया गया है तो ऐसा उनसे हर चीज़ लेना जाएज़ है । ये दलील इसलिए सही नहीं है क्योंकि किसी शब्द के आम होने से उससे फ़ायदा उठाना उसी हद तक सही है जिस लेहाज़ से वह हुक्म दिया गया हो । यह मसला आपको नीचे दी जा रही बातों पर ध्यान देने से समझ में आ जाएगा। मान लीजिए कुर्आन मजीद में कुत्ते के ज़रिये से शिकार कराने को जाएज़ होने का हुक्म दिया गया है आयत में इसका कोई बयान नहीं है कि जिस जगह पर कुत्ते का मुँह पड़े उसको पाक कर लिया जाए मगर इससे ये नतीजा तो नहीं निकाला जा सकता कि कुत्ते का मुँह पाक है क्योंकि हुक्म इस लेहाज़ से है ही नहीं । वहां मक़सद ये है कि उस जानवर को तुम हलाल समझो जिसे तुमने कुत्ते के ज़रिए शिकार किया है और वह मुर्दा (बिना ज़बह किया) नहीं है कि उस का खाना हराम हो । रह गया ये कि कुत्ते का मुँह नजिस है ये अपनी जगह पर साबित है और बताया गया है, उसी तरह यहां जो कुछ भी कहा जा रहा है वह ये कि उनके साथ ख़रीदना बेचना और व्यापारी रिश्ते रखने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन ये कि कौन सी चीज़ें इनके हाथ की पाक होंगी कौन नजिस, ये हरगिज़ इस आयत में नहीं बताया जा रहा है । देखिए तो कि किताब वालों के खाने मे कुछ ऐसी चीज़ें होती हैं जो ख़सतौर से मुसलमानों के लिए हराम है, जैसे सुवर का गोश्त वग़ैरह । तो क्या इस आयत से ये नतीजा निकाला जा सकता है कि उन चीज़ों का भी लेना जाएज़ है? क्योंकि इस आयत में कोई चीज़ आम नहीं की गयी है । इसी तरह वह चीज़ें कि जो हाथ लगने की वजह से नजिस हो जाती है ऐसे—इस तरह कि वे पाक नहीं की जा सकती है इस आयत में आम हुक्म होने पर उनका लेना जाएज़ नहीं हो सकता ।

और फिर मासूम इमामों अ0 की हदीसों ने जिनमें हर तरह की सही रवायतें मौजूद हैं, ये बता दिया है कि इस आयत में 'खाने' का मतलब सूखा अनाज और फल और सब्ज़िया हैं। इसके बाद कोई शक नहीं रहता कि इस आयत की नज़र सिर्फ़ ख़रीदने और बेचने के मामले पर है । पाकीजगी और नजासत से इसका कोई लगाव नहीं है

इस के बाद यह देखिये कि यह हुक्म शिया मज़हब की मानी हुई बातों में है जैसे मुताअ़ और तक़ईया के मसले जो सुन्नी फ़िरक़े के मुक़ाबले में अलग है। इस मसले में पहले और बाद के शीया आ़लिम एक मत हैं इस लिये यह शिया धर्म की मानी हुई अटल बातें हैं। अगर अक़ल से ग़ौर किया जाये तो आप को मालूम होगा कि यह नजासत का मसला शिया समुदाय में अगर किसी जज़्बे की वजह से बनावटी होता तो वह क्या जज़्बा हो सकता है? सिर्फ़ ताअ़स्सुब द्वेष और नफ़रत। पर सच बताइये कि शियों को अपने ही मुस्लिम समुदाय के उस गुट के हाथों जो शियों का विरोधी था ज़्यादा नुक़्सान पंहुचे या यहूदियों, ईसाइयों, मजूसियों (Magians) और हिन्दुओं से। इतिहास बताता है कि शिया गुट को ग़ैर मुस्लिम समुदायों के हाथों वह दुख झेलना नहीं पड़े जो अशिया मुसलमानों के हाथों। आज भी अगर किसी शीया से पूछिये कि तुम्हारे लिए

अंग्रेज अच्छे, हिन्दू अच्छे या दूसरे मुसलमान, तो वह दुनिया की दूसरी क़ौमों को Prefer करेगा क्योंकि उनके हाथों से कोई ख़ास तकलीफ़ उन्हें नहीं पहुँची है, जितनी सुन्नी मुसलमानों के हाथ से ।

शियों की आंख में बग़दाद के बन्दीघर और बनी अब्बास के ज़ुल्म और हुमरा महल की दीवारें जिनमें सादात (सैयदों) के खून का गारा दिया गया और बग़दाद की दीवारें जिनमें सादात ज़िन्दा चुने गये और सुल्तान सलीम उस्मानी के हुक्म से सत्तर हज़ार शीयों का क़त्ले—आम नरसहार और औरंगज़ेब का शीयों का हत्यारा ख़ंजर और जहांगीर के हाथों क़ाज़ी नुरूल्लाह शूसतरी का क़त्ल वग़ैरह, ये सब वाक़ये शीयों की नज़र के सामने आते हैं तो जिस्म पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं । इन हालात में ज़ाहिर है कि शीयों को नफ़रत और दुश्मनी जो कुछ भी हो सकती थी वह उन मुसलमानों से मिली । और ग़ैर मुसलमानों, जिनसे शियों को अगर मदद न भी मिली हो तब भी उनसे कोई ख़ास तकलीफ नहीं पहुँची। इस पर भी जब हम शिया फ़िक्ह (धर्म शास्त्र/शरीयत के मसले) और मज़हबी रवायतों में देखते हैं कि वह सुन्नी मुलसमानों के बावजूद इसके कि इनकी तलवारें शीयों की गर्दनों पर रहीं, फिर भी इन्हें 'पाक' कहते हैं । वह कहते हैं कि ये भले ही हमारे क़ातिल क्यों न हों लेकिन '*अल्लाह के रसूल मोहम्मद (स0)* के नाम लेवा हैं और कलमा पढ़ते हैं इसलिये इनका खाना—पानी और इनसे समाजी रिश्तों (सामाजिक सम्बन्ध Social Contact) जाएज़ हैं और एक ग़ैर मुस्लिम का खाना—पानी जाएज़ नहीं है। आप ग़ौर करें इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि ये मसला किसी मन की भावनाओं यानी अपने जी चाहने के जज़्बे पर निर्भर नहीं है, बल्कि एक शुद्ध तालीम है जो शियों को अपने इमामों (अ0) की ज़बानी पहुँची है और शिया अपनी किसी भी निजी भावना पर चले बिना इसपर चलते रहे हैं । और सुन्नी जो काफ़िर को पाक समझने लगे हैं वह देश की राजनीति (Politics) का नतीजा है, जिसके तहत उनको ज़रूरत थी कि वह दूसरे मुल्कों और बाहरी समाजों से रिश्ता बनायें। लेहाज़ा जंग—विजयी की पालिसी के तहत उनको ज़रूरत हुई कि वह इस्लाम के मज़बूत हुक्म का चाहे न चाहे दूसरा मतलब निकालें और अपने लिए काफ़िरों के साथ रिश्ता बनाने का रास्ता खोल लें ।

अब देखना ये है कि इस्लाम के इस हुक्म की मसलहत या दर्शन क्या हो सकता है । ये पहले कहा जा चुका है कि नजासत शरीयत का एक हुक्म है जिसके लिए किसी चीज़ में गन्दगी या ज़हरीलेपन का होना ज़रूरी नहीं है बल्कि इसकी बहुत सी मसलहतें हो सकती हैं । काफ़िर को नजिस ठहराने का ये मतलब नहीं है कि उनमें किसी तरह की गन्दगी है। हरगिज़ नहीं, बल्कि बहुत मुम्किन है कि कोई ग़ैर मुस्लिम इन्सान एक मुसलमान से ज़्यादा साफ़—सुथरा रहता हो। क़ाफिर को नजिस ठहराने की वजह उनसे नफ़रत पैदा करना भी नहीं है क्योंकि इस्लाम तो हुक्म देता है कि किसी का दिल न दुखाओ और हर एक से अछे से शिष्टाचार से पेश आने को पसन्द करता है, बल्कि इसकी मसलहत कुछ और ही है ।

बात ये है कि इस्लाम ने मुसलमानों के लिए खाने—पीने और रहन सहन के तरीक़े में हर तरह से कुछ ख़ास फ़र्क़ रखा था जो ग़ैर मुस्लिमों से अलग है ।

ग़ैर मुस्लिम गुट बहुत सी ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल करती हैं, जो मज़हब के लेहाज़ से एक मुसलमान के लिए जाएज़ नहीं है। दुनिया में 'एक प्याला व एक निवाला ' होना किसी के साथ मिल जुल कर ज़िन्दगी बिताने का इतना मज़बूत और असरदार हिस्सा है कि जिससे किसी आदमी का दूसरे आदमी पर असर हो जाना और उसी के रंग में रंग जाना बहुत ज़्यादा सम्भव होता है ।

इसके ख़ेलाफ़ सिर्फ़ खाने–पीने के न होने से बीच में एक ऐसी खाई पैदा हो जाती है कि चाहे कितनी ही दोस्ती हो और आपसी मेल–जोल हो मगर फिर भी ये डर पैदा नहीं होता कि मुसलमान इन कामों को करने पर तैयार हो जाएँ, जो काम ख़ासतौर से ग़ैर–मुसलमान करते है। इसके लिये ग़ैर–मुसलमानों की नजासत के हुक्म का साफ ब्यान किया गया है। इसका मक़सद मुसलमानों को उन चीज़ों से अलग रखना था जिसके इस्तेमाल से मुसलमानों को मना किया गया है और ग़ैर–मुसलमान उनका इस्तेमाल जाएज़ समझते हैं।

याद रखना चाहिए कि एक क़ानून जो किसी ख़ास मसलहत की वजह से क़ानून के जैसा लागू हो जाए तो उसमें आम बान (Generalization यानी वह सब पर लागू होना) पैदा हो जाती है। फिर ये नहीं देखा जाएगा कि कहां वह ख़ास मसलहत है भी और कहां नहीं है।

जैसे शारदा एक्ट (Sharda Act) कुछ ख़ास नुक़सानों की वजह से लागू किया गया जो ज़्यादा तर उन हिन्दुओं के यहां जिनके यहां आम शदियों से हट कर शादियॉ होती हैं उनमें पैदा होते हैं ।

क़ानून इन नुक़सानों के लेहाज़ से लागू किया गया लेकिन इस क़ानून की तरह लागू हो जाने के बाद अब ये आम General है, अब ये नहीं देखा जाएगा कि किस जगह वह नुक़सान पहुॅच रहा है और किस जगह नहीं । अब तो बहरहाल क़ानून के बन्धन का सवाल है ।

इसी तरह क़ाफिर की नजासत का हुक्म यूँ तो सामूहिक भलाई की वजह से है जो Probability रखती है ज़्यादा खाने पर लागू होती है मगर जब इसका हुक्म आमतौर पर लागू हो गया तो अब छूट (Exemation) और छोटी–छोटी टुक्ड़ियों का कोई लेहाज़ नहीं होगा। हो सकता है कि कोई ग़ैर मुस्लिम उन बातों में से किसी बात को न करता है जो मुसलमानों के यहां नाजायज़ ह, या कोई मुसलमान ख़ास तौर से अपने बारे में भरोसा रखता हो कि मैं जितना भी 'एक प्याला एक मुंह' (उनके साथ खाऊॅ पीऊॅ) हूँ फिर भी दूसरों का असर मेरे ऊपर नहीं पड़ेगा, अब इन सूरतों का कोई लेहाज़ नहीं किया जाएगा क्योंकि क़ानून आम तौर पर लागू हो गया है और इस हुक्म से कोई छूट नहीं है ।

कुफ्र (नास्तिकता) और इस्लाम की हदें

अगर हक़ीक़त में देखा जाए तो इस्लाम और ईमान दोनों बड़ी मुष्किल बातें हैं, मगर पाकी और नजासत के सम्बन्ध में ऐसा हरगिज़ नहीं है वरना एक तरफ़ तो इस खोज में सच्चे मुसलमान की ज़िन्दगी अजीरन हो जाती खोज कि सचमुच मुसलमान कौन है और दूसरी तरफ़ मुसलमानों के गुट में एक बड़ी फूट की बुनियाद इस तरह पड़ जाती कि हर एक दूसरे को क़ाफ़िर कह कर उसको नजिस ठहराता और मज़हब के लेहाज़ से उससे परहेज़ करना ज़रूरी बताता ।

ज़ाहिरी तौर पर कुफ़ और इस्लाम के बीच एक खुली हुई हद बताई गयी है और वह कलमा ''*ला इलाह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह*'' है जो इन्सान खुदा की तौहीद (एकेश्वरवादी खुदा का एक होना) और रसूल (स0) की रेसालत (खुदा के भेजे होने) की गवाही ज़बान से देता है वह मुसलमान समझा जाना चाहिए इस शर्त से कि इसके साथ–साथ ऐसी किसी बात का इनकार न करता हो जो सब मुसलमानों के एकमत मसले माने गये हैं, जिसे मुसलमान का बच्चा–बच्चा जानता है, जैसे – नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात वग़ैरह का वाजिब होना या शराब, बलात्कार, सुवर वग़ैरह का हराम होना ।

किसी बात का अक़ली दलील के लेहाज़ से तौहीद के विरोध की हद में पंहुचने तक ज़ाहिर बज़ाहिर कुफ़ का कारण नहीं ठहराया गया है

पेज नं0 6 का बकिया

जबकि कहने वाला उसे इस इक़रार के साथ न

(बाक़ी पेज नं० 10 पर)

शासन पद्धति

नहजुल बलाग़ा से उद्धृत

उर्दू अनुवादक : आयतुल्लाह सै० काज़िम नक़वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़

हिन्दी अनुवादक : जनाब जौनुल हसन सौराहवीं इलाहाबादी

क़िस्त : 2

सेना के असरदारो में तुम्हें सबसे अधिक पसन्द वह होना चाहिए जो उन सिपाहियों के साथ अपनी मदद और सहयोग में हमदर्दी करें और अपने निजी रुपये में से उन पर एहसान करे और सिपाहियों का वेतन इतना होना चाहिए कि वह उनके लिए और उनके परिवार के लिए जो उन्होंने अपने घरों में छोड़ दिये हैं काफ़ी हो ताकि उनको एकाग्र मन के साथ केवल दुश्मन से युद्ध की चिन्ता बनी रहे। इसलिए कि तुम्हारी मेहरबानी उनके दिलों को तुम्हारी ओर मोड़ देगी और उनके प्रेम का प्रमाण यह हो सकता है कि वह अपने हाकिमों की रक्षा के लिए तत्पर रहें और उनकी प्रभुता को भार न समझें और इसकी दुआयें न मांगे कि यह हुकूमत शीघ्र समाप्त हो जाये। इसलिए तुम्हारा कर्तव्य है कि उनकी आशाओं को बढ़ाओ और उनके अच्छे कामों की प्रशंसा करते रहो और जो बड़ा काम कोई करे तो उसकी सराहना करो इसलिए कि उनके अच्छे कामों की प्रशंसा ही बहादुरों को जोश दिलायेगी और कमज़ोरों में हिम्मत पैदा करेगा। फिर जो व्यक्ति जो कोई बड़ा काम करे उसको पहचानते रहो और एक के काम का सेहरा दूसरे के सर न बाँधो और न उनके कामों की सीमा से कम प्रशंसा करो।

देखो कभी किसी बड़े आदमी के छोटे काम को बड़ा और छोटे आदमी के बड़े काम को छोटा न समझना और जब कोई मामला तुम्हें अपनी सामर्थ से बाहर दिखाई पड़े या तुम्हारी समझ में न आये तो उसमें अल्लाह और रसूल की ओर ध्यान फेरों क्योंकि अल्लाह ने उस क़ौम को सम्बन्धित करके जिसको सही रास्ता दिखाना मंजूर था कहा है कि ऐ ईमानदारों! अल्लाह का हुक्म मानो और उसके रसूल का हुक्म मानों और उनका जो तुम में से हुक्म देने वाले (बारह इमाम और मासूम अ०) हैं। अतः अगर तुम्हारे बीच किसी बात में झगड़ा हो तो अल्लाह और रसूल की ओर ध्यान दो।

अल्लाह की ओर ध्यान देने का मतलब यह है कि उसकी किताब कुरआन मजीद की पवित्र बातों से सीख प्राप्त की जाये और रसूल की ओर ध्यान देने का मतलब यह है कि आपके उन बचनों पर अमल किया जाये जो इस्लाम धर्म के हर सम्प्रदाय में मान्य हैं और जिनमें कोई मतभेद नहीं है।

फिर यह कि तुम उन लोगों को फ़ैसला करने के लिए चुनो जो तुम्हारे विचार में सारी जनता में सबसे बेहतर हो। वह ऐसा व्यक्ति हो जिसे मामलात की उलझन परेशानी में न डाले, आपसी झगड़ों की खींच तान दिल को दुखी न बनायें, गल्ती को बार बार न दोहरायें वह जो हक़ के पहचानने के बाद उसकी ओर से पलटने में रुके नहीं। जिसका दिल लालच के फेर में न आयें और सरसरी निगाह से विचार करने को काफ़ी न समझे बल्कि बहुत ही विचार और समझदारी से काम लें। वह जो संदेह और शंका के समय पर सतर्क रहने वाला हो और प्रमाण मिल जाने पर बड़ी पाबन्दियाँ करने वाला हो। जो किसी एक पक्ष के बार-बार के विवाद से उलझने वाला न हो और जो मामलात की जाँच करने में बड़ी कठोरता से काम लेने वाला हो लेकिन जब किसी निर्णय पर पहुँच जाये तो उस पर पूर्णतया अटल रहे। वह ऐसा हो जिसकी प्रशंसा उसको धोखे मे न डाले और तानना जोश में न लाये। समझ लो कि इन गुणों के आदमी कम

हुआ करते हैं।

इसके बाद भी उनके फ़ैसलों की ख़ुद देखभाल करते रहा करो और उनकी तन्ख़्वाह इतनी रखो कि जो उनकी आवश्यकता पूरी कर दे और उनको लोगों की आवश्यकता न रहे और अपनी सभा में उनको इतनी इज़्ज़त दो जिसकी राजकीय सदस्यों मे से किसी को भी अपने लिए आशा न हो सके ताकि उन्हें अपने फ़ैसलों में रु-रियायत की ज़रूरत न हो और लोगों के विरोध करने का अंदेशा न हो। इस सम्बन्ध में बड़े सोच विचार से काम लो क्योंकि यह धर्म इसके पहले उद्‌दण्ड लोगों के हाथ में क़ैद था जिसमें कामुक भावनाओं के अनुसार कार्यवाही होती थीं और उसके द्वारा दुनिया को हासिल किया जाता था। फिर अपनी ओर से हाकिमों के बारे में विचार करो। उनको सदैव परीक्षा हेतु काम सौंपो ओर पक्षपात अथवा रियायत से नौकरियाँ न दो क्योंकि यह दोनों बातें अत्याचार और माल खो जाने का स्रोत हैं और उन हाकिमों में ऐसे लोगों को महत्व देना चाहिए जो अनुभवी और शरीफ़ घराने के लोग हों, जिनके परिवार के लोगों ने इस्लाम की सेवा से नाम कमाया हो क्योंकि ऐसे लोग नैतिक बातों में उच्च और सम्मान तथा प्रतिष्ठा के मामलों मो पाक दामन होंगे और लालच के फेर में कम पड़ने वाले ओर कार्यों के परिणाम पर अधिक निगाह रखने वाले होंगे। फिर उनके वेतन काफ़ी मात्रा में रखो ताकि वह उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सके और वह उन अमानतों के उपयोग से जो उनके कब्ज़े में है बेपरवाह रहें और उनके बारे मे तुम्हारी पोज़ीशन साफ़ रहे उस परिस्थिति में जब कि वह आज्ञा पालन न करें या बेईमानी से काम लें।

फिर उनकी हालत की देखभाल करते रहो और अपने वफ़ादार और ईमानदार जासूस उनपर मुक़र्रर करो इसलिए कि गुप्त रूप से कामों की देखभाल उनको प्रेरित करेगी कि वह अमानती और जनता के साथ मेहरबानी और भलाई के साथ पेश आयें। अब अगर उन हाकिमों में से किसी ने बेईमानी की ओर हाथ बढ़ाया जिसके बारे में तुम्हारे जासूसों की खबरें आयें तो बस प्रमाण के लिये उसको काफ़ी समझों और उसको शारीरिक दण्ड देने के अलावा उस रुपये को वसूल करो जो वह खा गया है। फिर उसको ज़िल्लत के स्थान पर खड़ा कर दो और बद दयानती (बेईमानी) का निशान उस पर लगा दो और उसकी गर्दन में माल के खा जाने के ऐब का तौक डाल दो।

तुमको मालगुज़ारी के मामले में भी समझदारी से काम लेना है। इस प्रकार कि माल गुज़ारी देने वालों के हमेशा के लिए फ़ायदे की बात भी ध्यान में रहे कि इस वर्ग के लोगों की ख़ुशहाली से सारी जनता की ख़ुशहाली है और दूसरे लोगों की भलाई हो नहीं सकती जब तक कि इनकी भलाई का बंदोबस्त न हो। ज़मीन की आबादी की चिंता तुम्हें माल गुज़ारी के वसूल करने से ज़्यादा रहना चाहिए इसलिए कि जिसने माल गुज़ारी को बिना आबादी के प्राप्त करना चाहा उसने देश को बर्बाद और खुदा के बंदों को तबाह कर दिया और उसकी प्रभुता भी बाकी नहीं रह सकती।

अगर वह जज़िया अदा करने वाले किसी असाधारण परेशानी का या किसी बीमारी या वर्षा के न होने या किसी स्रोत के बर्बाद हो जाने या ज़मीन के ख़राब हो जाने की बात करें या कहें कि बाढ़ आ जाने के कारण नुकसान हो गया तो तुमको चाहिए कि इतनी कमी कर दो जिससे कि मामलात की दुरुस्ती की उम्मीद हो सके और जो कुछ कमी करो वह तुम्हारी तबीयत पर भार न होना चाहिए क्योंकि (तुम्हारा यह काम बेकार न सिद्ध होगा बल्कि) यह तुम्हारा एक कोष है जो उनके पास सुरक्षित है जिनके कारण आईन्दा वह तुम्हारे शहर की आबादी की वृद्धि और तुम्हारे राजय की शोभा का कारण होंगे। फिर यह कि तुम्हारी प्रशंसा भी उनकी ज़बान पर होगी और तुम्हारी अर्न्तात्मा भी ख़ुश होगी कि तुमने उनके साथ न्याय और भलाई का काम किया और फिर तुम्हें विश्वास रखने का हक़ होगा। अपने उस एहसान के कारण जो तुमने उनके पास अमानत के तौर पर रख छोड़ा है वह ज़रूरत के समय अपनी शक्ति का प्रयोग तुम्हारी सहायता करने में करें और तुमको उन पर भरोसा हो सके कि तुम उनके साथ नर्मी और इन्साफ़ ही से हमेशा पेश आओगे। इसके बाद मुमकिन है ऐसी असाधारण परिस्थितियाँ पैदा हो जायें कि तुम्हें उन पर कुछ ज़्यादा भार डालना हो तो वह उसको खुले

दिल से बर्दाश्त कर लेगें क्योंकि जब देश आबाद है तो हर उस वस्तु का जिसका बोझ तुम डालो, बर्दाश्त कर सकता है।

भूमि की ख़राबी का कारण उस पर कृषि करने वालों की आर्थिक दुर्दशा हुआ करती है और उनकी यह शोकनीय दशा उस समय होती है जब हाकिमों को माल जमा करने की सीमा से अधिक हवस हो जाये और अपनी प्रभुता को बाक़ी रहने का उन्हें इत्मिनान न हो और अनुभवों से कम सीख प्राप्त करें। फिर इसके बाद यह कि कार्यालयों के कर्मचारियों की ओर ध्यान दो। अपने मुख्य कामों का ज़िम्मेदार उसको बनाओ जो उनमें सबसे बेहतर हो और अपने उन पत्रों को जिनमें तुम्हारी राजनीति और भेद की बातें लिखी हों विशेषकर उस आदमी को जो उन सब लोगों में अच्छी नैतिकता का सबसे अधिक भागी हो, जिसको अधिक सम्मानित होने पर ऐसा घमण्डी न बना दे कि वह सभा में तुम्हारा विरोध का साहस कर सके और ऐसा लापरवाह न हो कि तुम्हारे मनोनीत हाकिमों आदि के पत्र तुम्हारे सामने पेश करने और उनके उचित उत्तर देने में कमी करे और तुम्हारी ओर से जो समझौते करे या दूसरों से जो समझौते लें उनमें भी उचित ढंग से काम को निगाह मे रखे और समझौते की किसी शर्त में कोई कमज़ोरी न रहने दे और जो राजनीतिक दाँव पेंच दूसरे करें तो उनके तोड़ से अपने को मजबूर न बना ले और उसे स्वयं अपने व्यक्तित्व के गुणों का पूरा अन्दाज़ा होना चाहिए इसलिए कि जो स्वयं अपने को पहचान न सकता हो वह दूसरे के मूल्य का अंदाज़ा भी नहीं कर सकता। फिर उनका चुनाव तुमको अपनी निजी राय और इत्मिनान के अन्तर्गत न करना चाहिए इसलिए कि लोग हाकिमों के ख़्यालात को अपनी ओर अच्छा बनाने के लिए बनावट और उनकी सेवाऐं करके काम निकालते हैं हाँलाकि उनके दिल में सफ़ाई और ईमानदारी का थोड़ा सा अंश भी नहीं होता लेकिन तुम उनको चुनो उस अनुभव के आधर पर जो उनके संबन्ध में हो चुका हो तुम्हारे पहले अच्छे हाकिमों की ओर से नियुक्त हो चुकने की हालात में। फिर उनमें से जो जनसाधारण में अधिक नेक नाम हो, अमानत और ईमानदारी में ज़्यादा मशहूर हो उसे विशेषतया चुनो। ऐसा करना उसके साथ भलाई, ईमान और अपने से बड़े हाकिम (बादशाह) के साथ तुम्हारी ख़ैरख़्वाही का सुबूत होगा और तुमको चाहिए कि हर काम का एक-एक आदमी ज़िम्मेदार बना दो जो उस विभाग के बड़े से बड़े काम से अपने को मजबूर न समझे और इस सिलसिले में विभिन्न उत्तरदायित्वों का इकट्ठा हो जाना उसे परेशान न बना सके और याद रखो कि जो कुछ तुम्हारे कार्यालय के कर्मचारियों मे ऐब होगा और तुम जान बूझ कर उसकी अवहेलना करोगे तो उसके उत्तरदायी तुम समझे जाओगे।

तुम्हारे लिये अनिवार्य है कि तुम व्यापारियों और दस्तकारों का लिहाज़ रखो और उनसे नेकी और अच्छाई का बर्ताव करो चाहे वह व्यापारी एक स्थान पर रहकर व्यापार करने वाला हो या फेरी लगाने वाला हो या ऐसा मज़दूर हो जो शारीरिक परिश्रम से पैसा कमाता हो। बहरहाल यह सब मुनाफ़े के स्रोत और लाभ के तत्व हैं। और दूर दूर से ख़ुश्की और तरी, रेगिस्तानों और पहाड़ी इलाकों से वह जीवन सामग्री को खींच लाने वाले हैं और जहाँ जाने की हर व्यक्ति की हिम्मत नहीं है। यह लोग सुलह पसन्द हुआ करते हैं जिनसे ख़तरे का अंदेशा नहीं। इनकी तुमको देख-भाल रखनी चाहिए ये चाहे तुम्हारी राजधानी में हों और चाहे तुम्हारे राज्य के आस-पास फैल चुके हों।

इसके साथ साथ यह भी याद रखो कि इनमें से बहुत लोगों में बड़ी संकीर्णता और घृणा पूर्ण कंजूसी और नफ़ाख़ोरी की उम्मीद में माल को संचित कर रखना और विक्रय में बहुत अधिक लाभ प्राप्त करने की कोशिश मौजूद होती है और यह एक ऐसी वस्तु है जिससे जनता को हानि पहुँती है और हाकिमों की बदनामी होती है। अतः ग़ल्ले को मुनाफ़ा हेतु संचित रखने से मना करो इसलिए कि रसूले ख़ुदा ने इसके लिए मना किया है बल्कि बिक्री सही तौल, इंसाफ, ईमानदारी और खुले दिल से होनी चाहिए ऐसे भावों के साथ जिसमें क्रेता तथा विक्रेता दोनों में से किसी को नुकसान न हो। फिर अगर कोई तुम्हारे मना करने के बाद गल्ले को रोके तो उचित

मात्रा में सज़ा दो।

इनके बाद बहुत अधिक निम्न स्तर के लोगों का ध्यान रखना भी आवश्यक है इसलिए कि यह वह लोग हैं जिनके पास कोई जीवन उपाय और साधन नहीं है। ये मुहताज, निर्धन, ग़रीब और फ़ाक़े में मस्त और मजबूर लोग हैं। इन लोगों में ऐसे भी होते हैं जो अपने हाल में संतोष रखने वाले हैं और ऐसे भी हैं जो भीख मांगने लगते हैं और अल्लाह के लिए रक्षा करो उसके अधिकार की जो उन लोगों के बारे में है और उनके लिए ख़ज़ाने का एक भाग निश्चित कर दो और एक भाग अपने देश के पाक गल्लों में से निश्चित करो। इस भाग में दूर और नज़दीक के लोगों के साथ समानता होनी चाहिए क्योंकि तुम्हारा उनमें से प्रत्येक के अधिकार का ख़्याल रखना कर्तव्य है। तुमको हुकूमत का गुरूर उनकी ओर से बेपरवाही में न डाल दे इसलिए कि तुमको मामूली से भी काम को न करने के मामले में मजबूर न समझा जायेगा। अतः तुमको उनकी ओर ध्यान देने में कमी न करना चाहिए और उनकी ओर मुँह फेरना उचित नहीं है।

विशेषकर उन लोगों के कामों की देखभाल रखो जिनकी पंहुच तुम तक मुशकिल है, जिन पर निगाहें ज़िल्लत के साथ पड़ती है और लोग तुच्छ समझते हैं। तुमको चाहिए कि उनकी देखभाल के लिए एक उदार ईमानदार और परहेज़गार आदमी अपने खास आदमियों में से नियुक्त कर दो। वह उनके मामलात को तुम तक पहुँचाये। फिर तुम उनके साथ सुलूक करो ऐसा जो अल्लाह के यहाँ तुम्हारी ओर से जवाब देने के अवसर पर पेश किया जाये क्योंकि यह लोग दूसरों से ज़्यादा इंसाफ़ और सद्व्यवहार के मुहताज हैं और यूं तो फिर हर एक के हक़ अदा करने में तुम्हें अल्लाह के सामने अपने को बेगुनाह रखना ही है।

यतीमों तथा वृद्धावस्था के लोगों का भी ख़्याल रखो। उनकी ज़िन्दगी का कोई सहारा नहीं जो सवाल नहीं किया करते। उनके साथ मेहरबानी और देखरेख का इन्तिज़ाम वास्तव में हाकिमों के लिए बड़ी बुरी चीज़ सिद्ध होगी लेकिन सच्ची बात तो हर एक ही को बुरी मालूम होती है और कुछ नेक बन्दों की तबीयत पर अल्लाह इन बातों को आसान भी कर देता है जो क़यामत के दिन अपनी नजात (मुक्ति) चाहते हों तो वह दुखों और मुसीबतों को बर्दाश्त करते हैं और वह संतुष्ट है कि अल्लाह ने उनसे निजात (मुक्ति) के वादे किये हैं वह पूरे होकर रहेंगे। ✦✦✦

पेज न0 6 का बकिया

जबकि कहने वाला उसे इस इक़रार के साथ कहता हो कि वह ख़ुदा को एक नही जानता बल्कि बहाने या बात बनाने से काम लेता हो।

इसी वजह से अहले सुन्नत का अशअरी सम्प्रदाय ख़ुदा के गुणों को उससे अलग मानने के बाद भी मुसलमानों की पंक्ति (Ranks) में रहा और ख़ुदा को देखने को मान कर मुजस्समे सगुण साकार मानने वालों में दाख़िल नहीं हुआ हालॉकि यह ज़ाहिर है कि आठ अनादि गुण ज़ात से अलग होने के बाद अल्लाह एक नहीं रहा और दर्शन के क़ाबिल होने के साथ जगह आयतन, और दिशा से स्वतन्त्र नहीं रह सकता और शरीर बन जाता है। मगर यह लोग उन जुड़ी बातों से नहीं हैं, कहिए कि ख़ुदा को एक नही मानते? तो वे कानों पर हाथ रखेंगे, और कहिए कि तुम ख़ुदा को साकार मानते हो तो वह इनकार करेंगे। इस लिये अक़्ली हैसियत से वह एक मूर्खता के मुर्तकिब हों, मगर धर्मशास्त्र के हिसाब से काफ़िर नही ठहर सकते। क़ादियानी जमाअ़त में वह लोग जो मिर्ज़ा गुलाम अहमद को साफ़ साफ़ नबी कहते हों बज़ाहिर इस्लाम से ख़ारिज हैं। मगर अहमदी कि जो मुहम्मद अली साहेब के मानने वाले हैं और मिर्ज़ा गुलाम अहमद को नबी या रसूल नही मानते,सिर्फ़ एक मुजददिद (नूतनकारी) की हैसियत को मानते हैं उनके इस्लाम से ख़ारिज होने का कोई करण नहीं है।

(जारी...............)

इमाम हुसैन अ० की याद क्यों?

लेखकः जनाब सख़ी हैदर साहब, बाराबंकी

इस संसार की संक्षिप्त कहानी जीवन, मरण, उत्थान, पतन तथा सुख दुख की कहानी है। किसी भी वस्तु के विनाश या किसी प्राणी की मृत्यु का मूल कारण उसका अस्तित्व और जीवन होता है। इतिहास के पन्ने हर उस व्यक्ति को अपने हृदय में स्थान देते रहते हैं जो इस पृथ्वी की गोद में थोड़े भी समय के लिए चाहे सांसारिक सुखों की प्राप्ति के उद्देश्य से पृथ्वी को क्रीड़ा स्थल समझ कर आया हो, चाहे सभ्य समाज का नागरिक बनकर आया हो, चाहे अज्ञानता के अँधकार में ज्ञान ज्योति का सभ्य नागरिक बनकर आया हो, चाहे अज्ञानता के अंधकार में ज्ञान ज्योति लेकर आया हो, चाहे सत्य की रक्षार्थ असत्य का मुख बन्द करने आया हो और चाहे मानवता का रक्षक बनकर मानव दान का उपहार भेंट करने आया हो। इतिहास का स्वभाव है चरित्र चित्रण करना न कि वाह्य आकृति का चित्र प्रदर्शन करना। मेरा विश्वास है, अनुभव है, समाज की प्रवृत्ति है और मानव की प्रकृति है कि कोई भी व्यक्ति केवल धन, वंश, वैभव, शक्ति तथा सौन्दर्य के बल पर अपनी अमिट छाप दूसरे के हृदय में नहीं छोड़ सकता जब तक कि उसका चरित्र आदर्श न हो, विचार पवित्र न हों भावनाऐं मानवीय न हों और व्यवहार स्वयं रहित न हो।

एक आदर्श समाज में उसी व्यक्ति को जीवित रहने का अधिकार है जिसमें मानवता एवं प्रेम हो, बन्धुत्व की भावनायें विकास पा रही हों, उच्च विचार पवित्र हृदय की शोभा पा रहे हों और आदर्श चरित्र समस्त मानव समाज के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हो।

आज जब हमारा समाज शांति और अंहिसा के लिए, सत्यता और मानवता की रक्षा के लिए परेशान है। सब कुछ होने के बाद भी वह सुख की नींद नहीं सो सकता, शांति की साँस नहीं ले सकता, न्याय करके स्वयं न्याय का भागी नहीं बन सकता तथा मानव बनकर भी मानव का प्रेम नहीं प्राप्त कर सकता, ऐसा क्यों? केवल इसीलिए तो कि हम पथ भ्रष्ट हो चुके हैं, अपने आदर्शों को भुला चुके हैं एव स्वार्थ के वशीभूत होकर स्वार्थी बन गये हैं।

आज संसार उन व्यक्तियों को नहीं चाहता जो अपनी प्यास मनु पुत्र के निर्दोषी एवं मासूम रक्त से बुझाना चाहते हों, जो ग़रीब की कुटी को जलाकर अपना महल बनाना चाहते हों, जो केवल थोड़े से सांसारिक वैभव की प्राप्ति हेतु निर्दोषी एवं सत्यवादी आदर्श चरित्र वाले व्यक्तियों का गला घोंट देने को तैयार हो तथा जो व्यक्ति थोड़ी सी शक्ति के स्वामी बनकर ईश्वर को भूल जाते हैं और उनकी दृष्टि में प्रत्येक पाप पुण्य का प्रतीक होता है, प्रत्येक अन्याय न्याय का रूप होता है, और प्रत्येक बुराई भलाई की तस्वीर होती है। समाज उन व्यक्तियों को याद करता है और याद करता रहेगा जो प्रकृति के पथ पर अग्रसर हो, जो स्वयं भूखे रह जायें परन्तु भूखे की एक आवाज़ पर सर्वत्र लुटा देने को तत्पर हों, जो स्वयं पुराने कपड़ों में जीवन निर्वाह करें और अपने दासों को सुन्दर वस्त्र पहनाये, जो प्यार के एक शब्द पर शत्रु को भी पानी प्रदान कर दें। भले ही शत्रु उन पर पानी बन्द करके अपनी क्रूरता का परिचय दे। इसी भांति हम उन व्यक्तियों को चाहते हैं जो शांति प्रिय, सत्यवादी, सदाचारी हों और सत्य की रक्षा के लिए तन, मन, धन तथा जीवन की बाज़ी लगाने को तैयार हों।

इतिहास साक्षी है कि वे व्यक्ति जो सत्य की रक्षार्थ

अपने जीवन की क़ुर्बानी दे दें, सदैव अमर हैं और रहेंगे परन्तु वे दुराचारी जो सांसारिक सुख एवं शांति में इतना उत्मत्त हुए कि सत्य, असत्य तथा न्याय, अन्याय न समझ सके वे जीवन में भी मृतक की भांति शरीर धारी हैं और मृत्यु के बाद भी पृथ्वी के वक्ष-स्थल पर भार स्वरूप।

मानव का स्वभाव है कि वह प्रत्येक दुराचारी, क्रूर, अन्यायी और पथ भ्रष्ट के अन्त पर प्रसन्न होगा और इसके विपरीत हर सदाचारी सत्यवादी और आदर्श व्यक्ति के अन्त पर दुख मनायेगा, विलाप करेगा और शोकमय गीत गायेगा आदि-आदि। यह एक कसौटी सदाचारी और दुराचारी व्यक्तियों के परखने की है। यदि एक दुराचारी की मृत्यु पर समाज दुख और शोक स्वाभाविक रूप से मनायेगा तो समाज दुराचारी कहा जायेगा। इसके विपरीरत यदि सदाचारी ने निधन पर सुख एवं प्रसन्नता मनायी जाये तो भी समाज दुराचारी कहलायेगा। स्पष्ट यह हुआ कि प्रायः स्वाभाविक रूप से सदाचारी के अन्त पर दुख और दुराचारी के निधन पर सुख एवं प्रसन्नता होनी चाहिए।

यदि कोई आदर्श एवं सदाचारी व्यक्ति स्वाभाविक मृत्यु का शिकार न बने और क्रूरता एवं अन्याय के आधार पर उसका वध कर दिया जाये, उस समय ऐसे व्यक्ति पर दुख, शोक एवं विलाप बहुत अधिक हो जाना स्वाभाविक ही है। अब जिसकी मृत्यु पर जितना सुख एवं प्रसन्नता मनायी जाये वह उतना ही बड़ा दुराचारी होगा तथा इसके विपरीत दूसरा व्यक्ति उतना ही बड़ा सदाचारी होगा।

बस अब मैं इसी कसौटी पर इमाम हुसैन के आदर्श जीवन और व्यक्तित्व का चरित्र चित्रण संक्षेप में कुछ मूल आधारों के बल पर आपके समक्ष करने का प्रयत्न करूँगा, आशा है कि बुद्धिमान पाठक वास्तविक निर्णय तक स्वयं तर्क एवं बुद्धि के बल पर पंहुचने का प्रयत्न करेंगे।

इमाम हुसैन और उद्देश्यः

इमाम हुसैन उस परिवार की निशानी थे जिसका सम्बन्ध मुहम्मद साहब से था। मुहम्मद साहब को इमाम हुसैन की शांति प्रियता, दया एवं बन्धुत्व भावना पर गर्व था। इमाम के जीवन का उद्देश्य सत्य की रक्षा, अहिंसा एवं बन्धुत्व प्रेम का जीवन व्यतीत करना था।

यह एक सर्वमान्य बात है कि जब दो व्यक्तियों या दो राष्ट्रों में युद्ध होता है तो एक आक्रमणकारी होता है और दूसरा प्रतिरक्षक होता है। दोनों के मध्य कोई उद्देश्य विशेष होता है, जो उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो जाये वही विजयी है चाहे विजय के लिए कितनी ही महान क़ुर्बानी (Sacrifice) देनी पड़े। कर्बला के युद्ध में एक ओर अन्याय, असत्य, पाप, सांसारिक ऐश्वर्य एवं क्रूरता का प्रतीक यज़ीद था तो दूसरी ओर सत्य, अहिंसा, शांति, मानवता, दया एवं उदारता के प्रतीक इमाम हुसैन थे। दोनों के उद्देश्य भिन्न-भिन्न थे। यज़ीद चाहता था कि इमाम उसकी बैयत करलें अर्थात उसको धार्मिक नेता स्वीकार कर लें और इमाम हुसैन एक ऐसे अपवित्र व्यक्ति को इस्लाम जैसे पवित्र धर्म का पेशवा कैसे मानते जो शराबी हो, क्रूर हो और अन्यायी हो। अब देखना यह है कि यदि इमाम बैयत कर लेते तो पराजित कहे जाते और यज़ीद विजयी परन्तु यदि बैयत नहीं किया और समस्त घर की सम्पत्ति की क़ुर्बानी सत्य की रक्षा के लिए कर दिया तो वही इमाम महान विजयी तथा यज़ीद सदैव निन्दा का पात्र बना रहेगा। बड़े-बड़े विद्वानों एवं दार्शनिक का मत है कि "क़ुर्बानी का स्तर किसी वस्तु से प्रेम की सीमा का द्योतक है"। कहने का अर्थ यह है कि क़ुर्बानी जितनी अधिक होगी प्रेम की सीमा उतनी ही असीम मानी जायेगी। इमाम हुसैन ने कर्बला में इतनी ही महान क़ुर्बानी सत्य की रक्षार्थ (इस्लाम की रक्षार्थ) दी कि संसार आज तक ऐसी क़ुर्बानी न दे सका है और न दे सकेगा। इमाम हुसैन के साथ कर्बला के मैदान में बच्चे थे, औरतें थीं, उन सब पर यज़ीद ने पानी बन्द कर दिया केवल इसलिए कि इमाम सत्य के पुजारी थे और यज़ीद असत्य का रक्षक एवं पोषक। इमाम और उनके साथियों पर यह तीन दिन तक खाना और पानी बन्द नहीं किया गया था बल्कि बैयत लेने का एक ढंग था। परन्तु यह (इमाम) वह पहाड़ थे जिसे सांसारिक आंधियाँ उड़ा नहीं सकती

थीं। इमाम भूखे प्यासे रहे, हँसते हुए मासूम चेहरो को यज़ीद की क्रूरता का शिकार बनते देखा, सबको ख़ून में नहाते देखा परन्तु बैयत न किया। अब निर्णय हमारे पाठक स्वयं करें कि कौन विजयी हुआ? यज़ीद या हुसैन? जबकि यज़ीद का उद्देश्य बैयत लेना था और हुसैन का उद्देश्य बैयत न करना।

इमाम हुसैन और मानवता

इमाम हुसैन का पवित्र जीवन मानवता के सिद्धाँतों से भरा हुआ है परन्तु उनके जीवन की कुछ ऐसी घटनायें हैं जिन्हें कदापि भुलाया नहीं जा सकता। जिस समय इमाम हुसैन अपने छोटे क़बीले के साथ कर्बला की ओर बढ़ रहे हैं उसी समय यज़ीद ने अपने सेनापति हुर को एक सेना के साथ इमाम के बैयत लेने भेजा और बैयत न करने में इमाम का सर लाने को कहा। जिस समय हुर की भेंट इमाम से हुई, इमाम हुर के उद्देश्य को समझ गये परन्तु हुर के पास पीने का पानी समाप्त हो गया था, प्यास से लोग मर रहे थे चारों ओर दूर-दूर तक कहीं भी पानी न था। इमाम के साथियों ने इमाम से शत्रु को समाप्त कर देने के लिए कहा और कहा कि इससे सुन्दर अवसर शत्रु को मार डालने का क्या होगा? परन्तु इमाम की मानवता शत्रु को प्यासा मार डालने की न थी जबकि शत्रु ने इमाम को प्यासा ही रख कर मारा था। इमाम हुसैन ने शत्रु सेना को पानी पिलाया साथ ही समस्त हाथी-घोड़ों को पर्याप्त पानी पिलाया और पुनः शत्रु से कहा कि अब यदि चाहो तो मुझे रास्ता दे दो, मैं भारत चला जाऊँ। परन्तु मैं बैयत नहीं कर सकता क्योंकि वह ग़लत है और हमारे चरित्र एवं उद्देश्य के विपरीत है। यह थी इमाम हुसैन की मानवता तथा दूसरी ओर यज़ीद की क्रूरता यह थी कि इमाम हुसैन जैसे व्यक्ति एवं उनके समस्त साथियों पर तीन दिन तक खाना पानी बन्द कर दिया और प्यासा ही क़त्ल कर दियां अब हमारे पाठक स्वयं बतायें कि संसार इमाम हुसैन को याद करे या यज़ीद को? इतिहास का कोई भी व्यक्ति ऐसा चरित्र नहीं पेश कर सकता जो हुसैन इब्ने अली ने पेश कर दिया। मानवता यदि इमाम हुसैन पर गर्व करती है तो आश्चर्य की क्या बात?

इमाम हुसैन और युद्ध

युद्ध सदैव उस व्यक्ति से किया जाता है जो स्वयं युद्ध करना चाहे परन्तु कर्बला का युद्ध एक विशेष युद्ध है जिसमें यज़ीद इमाम को युद्ध के लिए बाध्य करता है और इमाम युद्ध करना उचित नहीं समझते इसीलिए युद्ध से दूर हटते थे। युद्ध न करने के उद्देश्य से ही इमाम भारत आने की आज्ञा यज़ीद से मांग रहे थे परन्तु आज्ञा न मिली क्योंकि यज़ीद अपनी सांसारिक शक्ति का प्रदर्शन इमाम हुसैन के छोटे से समूह जिसमे बच्चे, बूढ़े और स्त्रियाँ भी थीं, पर करके संसार को अपनी क्रूरता एवं शक्ति के प्रभाव में लाना चाहता था और अपने को इसी बल पर ख़लीफ़ा (धार्मिक नेता) मनवाना चाहता था। यह सिद्ध करने के लिए कि इमाम युद्ध नहीं चाहते थे कुछ महत्वपूर्ण तर्कों का वर्णन करना आवश्यक है। किसी भी युद्ध के लिए सेना, शस्त्र, खाद्य सामग्री तथा वीर योद्धाओं की आवश्यकता होती है। युद्ध के समय सेना में न बच्चे होते हैं और न स्त्रियाँ एवं वृद्ध, इसके साथ ही सैनिक की छुट्टी रद्द कर दी जाती है अब हम कर्बला के युद्ध को इस कसौटी पर परख कर देख सकते हैं कि कौन युद्ध चाहता था? इस बात को सिद्ध करते समय इतिहास बोल उठेगा कि इमाम हुसैन के पास साथियों में केवल बहत्तर थे जिसमें स्त्रियाँ, बच्चे एवं वृद्ध सभी थे। तो क्या किसी सेना के सिपाही ऐसे होते हैं? जहाँ तक अस्त्र-शस्त्र का सम्बन्ध है वह इमाम के पास युद्ध विशेष के उद्देश्य से न थे बल्कि अरब में उस समय यह एक प्रथा थी कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी यदि कहीं जाये तो तलवार और तीर अपने पास रखे तो, अगर इमाम के पास तीर तलवार थे तो उनका यह तात्पर्य नहीं कि वह यज़ीद से युद्ध के लिए ही थे बल्कि वह एक प्रथा विशेष के प्रतीक थे। तीसरी बात जो युद्ध के लिए आवश्यक है वह सैनिकों की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगाना है परन्तु कर्बला के युद्ध में हम देखते हैं कि यहाँ 9 मोहर्रम की रात को चराग़ बुझा दिया जाता है और आज्ञा दी जाती है कि जो जाना चाहे चला जाये वरन् कल सबको शहीद होना है परन्तु सच्चे साथी इस कठिन परिस्थिति में इमाम को छोड़ कर कदापि जा नहीं जा सकते थे। उपरोक्त समस्त बातें

सिद्ध करतीं हैं कि इमाम युद्ध कदापि नहीं चाहते थे। परन्तु यज़ीद ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके इमाम को युद्ध के लिए बाध्य कर दिया। इस पर भी इमाम ने आक्रमण न किया बल्कि अपनी रक्षा की जो प्रत्येक धर्म का नियम एवं सिद्धाँत है।

इमाम हुसैन और सहनशीलता

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ सहनशीलता होती है। परन्तु जिस सहनशीलता का परिचय इमाम हुसैन ने दिया वह न तो कोई दे सकता है और न अभी तक दिया है। कर्बला के मैदान में इमाम को लड़ना न था बल्कि अपने उद्देश्य को सदैव जीवित रखने के लिए महान त्याग और बलिदान करना था इसीलिए इमाम हर स्थान पर कष्ट सहिष्णु नज़र आते थे। यद्यपि इमाम चाहते तो बहुत बड़ी शक्ति एकत्रित कर सकते थे और यज़ीद को समाप्त कर सकते थे परन्तु उस समय शक्ति प्रदर्शन इमाम की सफलता के लिए आवश्यक न था। क्योंकि उसके प्रयोग से बलिदान की सीमा कम हो जाती एवं उद्देश्य की सफलता अपूर्ण रह जाती।

इमाम ने कहाँ कहाँ धैर्य धारण किया, उसका वर्णन नहीं हो सकता परन्तु फिर भी कुछ वर्णन करना आवश्यक है। दस मोहर्रम को इमाम का भरा घर लुट रहा है और यज़ीद प्रसन्न हो रहा है। कभी इमाम भाई को विदा करते हैं कभी जवान बेटे को, कभी अपने प्रिय मित्र हबीब को और कभी अपने ग़ुलाम जौन को, और फिर हर थोड़ी देर बाद सबकी लाश तक पहुँचते हैं और उसको ख़ेमे तक लाते हैं। अब आप स्वयं कल्पना कीजिए कि वह इमाम जो तीन दिन का प्यासा हो, किसका किसका दुख एक ही समय में सहन कर सकता है, परन्तु आज प्रकृति इसी सहनशीलता की परीक्षा ले रही है। इमाम को प्रत्येक दुख सहन करना ही था न कि शक्ति एवं बाहुबल का प्रदर्शन। कर्बला के मैदान में एक समय ऐसा भी आया जब सब मौत के घाट चल बसे और इमाम हुसैन अकेले बच रहे तब इमाम ने आवाज़ दी कि हमारी मदद कौन करेगा? यह आवाज़ सुनकर एक छोटा छः महीने का बच्चा चीख़कर अपने झूले से गिरा और बता दिया कि इमाम की मदद मैं करूँगा। यह वह बच्चा है जो इमाम का सबसे छोटा पुत्र है इसका नाम हज़रत अली असग़र है जो स्वयं भी प्यास से व्याकुल है। इमाम बच्चे को हाथों पर उठा लाये और शत्रु से कहा, मुझे पानी न दो मगर इस मासूम बच्चे की प्यास ही बुझा दो। इसके उत्तर में शत्रु दल से एक ऐसा घातक तीर आया जो हज़रत अली असग़र के गले को छेदता हुआ इमाम के बाज़ू को तोड़कर निकल गया। बच्चा बाप के हाथ पर दम तोड़ कर रह गया। क्या कोई इतना सबर कर सकता है। अन्त में इमाम स्वयं मैदान में आये और बड़ी वीरता से लड़े परन्तु चारों ओर से तीर थे और इमाम का एक शरीर, इमाम हुसैन घोड़े से नीचे गिरे और शत्रु ने इमाम का सर तन से जुदा कर दिया। इमाम का शहीद होना था कि समस्त पृथ्वी काँप उठी, काली आँधियां चलकर दुःख का प्रदर्शन करने लगीं और सृष्टि की हर वस्तु विलाप मग्न हो गई।

उपरोक्त समस्त बातें एक ऐसे सत्य की ओर ध्यान को ले जाती है जिसको कोई भी व्यक्ति भुला नहीं सकता। इतिहास में न तो ऐसा मानावता-प्रेमी मिलेगा न इतना त्याग एवं बलिदान की भावना रखने वाला व्यक्ति। मानव समाज सदैव ऐसे महान चरित्रवान व्यक्ति की याद मानता रहेगा और उसके शत्रु की निन्दा करता रहेगा।

इमाम हुसैन ने वह कार्य करके दिखाया जो आज तक केवल मुसलमानों के लिए ही शिक्षा पद नहीं है बल्कि हर व्यक्ति के लिए जिसके हृदय में थोड़ी सी मानवता है। इमाम ने यह महान क़ुर्बानी किसी जाति या किसी धर्म विशेष के लिए नहीं दी थी वरन् समस्त मानव समाज के लिए अतः आज इमाम किसी धर्म विशेष की याद के लिए नहीं बल्कि समस्त मानवीय जगत के लिए स्मर्णीय हैं और रहेंगें। मानव ऐसे महान व्यक्ति के साथ ऐसे अन्याय की याद करके सदैव यज़ीद की निन्दा करेगा और इमाम पर आँसू स्वाभाविक रूप से बहायेगा और इन आँसूओं को जो दिल की आवाज़ सुनाने के लिए बहे, कोई रोक नहीं सकता।



मुख्य समाचार

फ़िलिस्तीनियों की १२०० एकड़ आराज़ी हथियाने की नई सहयूनी साज़िश

फिलिस्तीन में इस्राईल की ग़ासेबाना सरगरमियों और ग़ैरक़ानूनी तौसीअ पसन्दी के साथ फिलिस्तीनियों की इम्लाक और आराज़ी हथियाने का सिलसिला बदस्तूर जारी है। इत्तेलाआत के मुताबिक़ क़ाबिज़ इस्राईली हुकूमत ने पूरवी बैतुल मुक़द्दस में अलअज़ीरिया और अबूदेस में फिलिस्तीनियों की 1200 एकड़ आराज़ी खाली करने के नोटिस जारी किये हैं। अबूदैस दयही कौन्सिल के चेयरमैन आदिल सलाह ने मरकज़ इत्तेलाआत फिलिस्तीन के नुमाइन्दे को बताया कि सहयूनी हुकूमत की जानिब से मक़ामी फिलिस्तीनी आबादी को नोटिस मिले हैं जिन में अबूदैस में ज़हर हारक़रारेत, ज़हरा अर्रग़ाब्ना, और उम्मुश्शखलैब, वादी अबू हिन्दी, अलखलाएल, और हौज़ नम्बर तीन से मुलहक़ा अस्सराराात, अलमरजा, अलक़लआ, ज़हरूल मराह़, सतहुल एज़ाल, अरक़ूबुल मराह़ और बातिन बशारह के मक़ामात की 476 एकड़ आराज़ी को खाली करने का हुक्म दिया गया है।

फ़िलिस्तीनी नौनेहाल के जनाज़े पर इस्राइली फौज की फाएरिंग

इस्राईली फौज ने मग़रिबी किनारे के शहरूलखलील में एक फिलिस्तीनी बच्चे के जनाज़े पर अन्धाधुन्ध फाएरिंग कर दी जिस से तीन फिलिस्तीनी ज़ख़्मी हो गये। मग़रिबी किनारे में यहूदी आबादकारी मुखालिफ क़ौमी कमेटी के तर्जुमान ने बताया कि सहयूनी अहलकारों ने 18 दिसम्बर की सुब्ह तेरह साला मोहम्मद समीह सबारना नाम के बच्चे के जनाज़े पर अचानक फाएरिंग शुरू कर दी।

सबारना की मृत्यु किसी लाइलाज रोग में हो गयी। आबाद कारी मुख़ालिफ़ कौमी कमेटी के मुताबिक अलख़लील शहर के बैत अमर टाउन के दाखली रास्ते पर पहले से ही इस्राईली अहलकार बड़ी संख्या में मौजूद थे जैसे ही जनाज़ा वहां पंहुचा तो शोरका में सख़्त नाराज़गी फैल गयी, इस्राईली फौज की जानिब से बिला जवाज़ रोक टोक के कारण झड़पें शुरू हो गयीं जिसके बाद इस्राईली फौजियों ने जनाज़े के शोरका पर फाएरिंग शुरू कर दी।

सहयूनी फौजी जनाज़े के शोरका को मुन्तशिर करने के लिए बम, आंसू गैस और बड़ी गोलियां फाएर कीं। मरकज़ इत्तेलाआत फिलिस्तीन के मुताबिक दूसरे फौजियों ने मज़ाहेरीन पर असली गोलियां भी फाएर कीं। इलाके में आंसू गैस फैलने से नौउम्र लड़के के जनाज़े के शोरका सख़्त तकलीफ़ में मुब्तेला रहे। इस दौरान सहयूनी फ़ौज की फाएरिंग से तीन फिलिस्तीनी और ज़ख़्मी हो गये।

ग़ज़्ज़ा में हमास के ख़िलाफ़ ज़मीनी कारर्वाई इस्राईल की संगीन ग़लती होगी : सै0 हसन नसरूल्लाह

18 नवम्बर हज़बुल्लाह के सरबराह सै० हसन नसरूल्लाह ने कहा है कि ग़ज़्ज़ा में हमास के खिलाफ ज़मीनी कार्रवाई इस्राईल की संगीन ग़लती होगी। बैरूत में शिया मुसलमानों की एक मज़हबी रैली से खेताब के दौरान हुज्जतुल इस्लाम सै० नस्रूल्लाह ने कहा कि ग़ज़्ज़ा में मज़ाहमत ताक़त जोरों पर है और उसके पास ताकत और मन्सूबा बन्दी की सलाहियतें मौजूद हैं ऐसी सूरत में कोई ज़मीनी हमला इस्राईल की संगीन ग़लती होगी। दूसरी जानिब इस्राईल ने तल अबीब में आएरन डोम सिलसिले की एक और मीज़ाइल शिकन बैटरी नस्ब की है। इससे इस्राईल के बैनुल अक़वामी एयर पोर्ट समेत दीगर इलाकों को मीज़ाइल हमलों से बचा लिया जाएगा। इस से पहले ग़ज़्ज़ा की तरफ से फाएरिंग किए गये दर्जनों राकेटों को उस नेज़ाम ने फेज़ा ही में तबाह कर दिया।

हज़रत यूसुफ अ० के मज़ार पर यहूदी धावे के बाद झड़पें

14 दिसम्बर को सैकड़ों यहूदी आबादकारों ने रात गये मग़रिबी किनारे के शहर नाबिल्स में मौजूद जलीलुलक़द्र पैग़म्बर हज़रत यूसुफ अ० की क़ब्र पर धावा बोलकर तलमूदी रस्मों की अदाएगी की, जिसके बाद उस इलाक़े के फिलिस्तीनियों ने नाराज़ होकर यहूदियों पर हमला कर दिया, जिस पर मज़ार के बाहर झड़पें शुरू हो गयीं।

ख़बर रसां एजेन्सी "कुद्स पुरसी" के मुताबिक बसों और कारों पर सवार सैकड़ों यहूदी, इस्राईली सेक्योरटी अहलकारों की हेफाज़त में आधी रात को मज़ार मुबारक हज़रत यूसुफ अ० पंहुचे और वहां पर तलमूदी रस्में अदा करना शुरू कर दी। इस्राईली सेक्योरटी फौजें उस दौरान इलाके में गश्त करती रहीं। मरकज़ इत्तेलाआत फिलिस्तीन के मुताबिक यहूदी आबादकारों की जानिब से जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के मज़ार मुबारक की बेहुरमती पर फिलिस्तनियों ने नाराज़ हो कर सेक्योरटी अहलकारों और यहूदियों पर पथराव शुरू कर दिया जिसके बाद देखते ही देखते इलाका मैदान जंग का मनज़र पेश करने लगा। इस्राईली सेक्योरिटी फौजों ने फिलिस्तीनियों पर धमाके दार बमों और आंसू गैस की बरसात कर दी। जिससे कई लोग ज़ख्मी हो गये। ख़्याल रहे कि इस्राईली पार्लियामान में रात के वक़्त में हज़रत यूसुफ अ० की मज़ार पर यहूदियों को तलमूदी रस्में अदा करने की इजाज़त दे रखी है जिस रात यहूदियों को मज़ार जाना होता है फिलिस्तीनी अथारिटी की सिक्योरिटी फौज जान बूझकर इलाका खाली कर देती है जिसके बाद सहयूनी सिक्योरिटी फौजों की निगरानी में यहूदी लोग हज़रत यूसुफ की मज़ार पर नाच गाने वाली रस्में अदा करते हैं।

लखनऊ में अक़ीदत व एहतेराम के साथ करबला के शहीदों को याद किया गया।

25 नवम्बर को लखनऊ में यौमे आशूरा को पूरे अक़ीदत व एहतेराम के साथ करबला के शहीदों की याद में पुर अमन माहौल में जुलूस निकाले गये। एक तरफ जहां शिया फिरक़े के लोगों ने मातम व सीना ज़नी करके शहीदों को खेराजे अक़ीदत पेश किया वहीं सुन्नी फिरक़े के लोगों ने ताज़िये निकाल कर करबला वालों को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया। पूरे शहर में मुख्तलिफ मक़ामात से जुलूस निकाले गये। शबे आशूर अलम को देखकर सोगवारों में एक कोहराम था। सर और सीना पीटते हुए अज़ादार, इमाम हुसैन अ० की शहादत के ग़म में डूबे या हुसैन या हुसैन की सदाओं के साथ सिस्कियां ले रहे थे। सियाह माहौल पूरी तरह हावी था। पुरूष, स्त्री, बच्चे व बूढ़े ग़मों की चादर ओढ़े हुए थे। मुख्तलिफ इमाम बाड़ों से निकाले गये जुलूस में अज़ादार अलम की ज़ियारत के लिए बेदार थे। नौहा व मातम से क़दीम लखनऊ की गलियां और सड़कें फर्श अज़ा बनी हुई थीं। जुलूस से क़ब्ल इमामबाड़ा ग़ुफरानमॉब में क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने मजलिस को खिताब करते हुए पुर अम्न माहौल बनाए रखने की अपील की। साथ ही हज़रत इमाम हुसैन अ० और करबला के शहीदों का ज़िक्र करते हुए उन्हें ख़िराजे तहसीन पेश किया। मौलाना ने कहा कि "करबला के मैदान में हज़रत इमाम हुसैन अ० पूरी कोशिश करते रहे कि उन्हे आगे जाने दिया जाए मगर यज़ीदी फौज ने उन्हें करबला में ही रुकने पर मजबूर किया।"

आखिर आशूरा की रात आयी और यज़ीदी फौज ने हमला शुरू कर दिया तो इमाम हुसैन अ० ने एक रात की मोहलत इबादते इलाही के लिए मांगी इमाम अ० ने अपने बावफ़ा अस्हाब के साथ ये पूरी रात खुदा की इबादत और शुक्रे इलाही में बसर की।

क़ायदे मिल्लत ने कहा कि इमाम हुसैन अ० ने अपने साथियों से कहा कि दुश्मन केवल आले रसूल के खून के प्यासे हैं तुम चाहो तो यहां से चले जाओ लेकिन करबला के शहीदों ने इमाम हुसैन अ० की सारी कोशिशों के बावजूद भी उनका साथ नहीं छोड़ा। सुबह होते ही यज़ीद की फौज ने तीरों की बारिश शुरू कर दी और दोपहर तक करबला में शहीद होगये। इस मौक़े पर अज़ादार वाक़य-ए-करबला सुनकर ज़ारो क़तार रोते रहे। वहीं दूसरी तरफ बरादरान अहले सुन्नत ने जलसे कायम करके हज़रत इमाम हुसैन अ० व करबला के शहीदों को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया। मस्जिदे सुब्हानिया, राजा बाज़ार में यौमें हुसैन मनाते हुए क़ारी मोहम्मद सिद्दीक़ साहब ने कहा कि हज़रत इमाम हुसैन अ० की शहादत इस्लामी तारीख़ में सब बड़ी शहादत है। हज़रत इमाम हुसैन अ० को इस्लाम दुश्मनों ने मैदाने करबला में इन्तेहाई ज़ुल्मो सितम के साथ शहीद किया। उन्होंने भी वाकय-ए-करबला को दुनिया का सबसे दर्दनाक वाक़ेआ क़रार दिया।